चित्रात्मक तत्वों के आधार पर अकबर और जहाँगीरकालीन लघु चित्रों में पशु - पक्षी चित्रण का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच . डी. (चित्रकला) की डिग्री के पंजीकरण हेतु

कला और सामाजिक विज्ञान के संकाय में

दी आईआईएस विश्वविद्यालय, जयपुर

शोधार्थिनी

श्रुतिजैन

पीएच.ड़ी. (2011 - 2012)

नामांकन संख्या– ICG/2011/13027

शोध निर्देशिका:

डॉ. रीता प्रताप

पुर्व विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग,

राजस्थान विश्वविद्यालय

दृश्य कला विभाग

जून, 2012

परिचय

मुग़ल चित्रकला का जन्म, उत्थान एवं पतन मुग़ल साम्राज्य के जन्म उत्थान एवं पतन के साथ सन्निहित है। कुछ समय पूर्व मुगल कला को ईरानी चित्रकारी की एक शैली मात्र कहा जाता था, जो स्थानीय विभिन्नता के कारण उत्पन्न हो गई थी परन्तु अब यह माना जाने लगा है कि मुग़ल कला का अपना पृथक अस्तित्व है और वह ईरानी प्रभाव से मुक्त न होकर भी पूर्ण भारतीय है। मुग़ल चित्रकला भारतीय, फारसी तथा इस्लाम का मिला जुला रूप है।

मुग़ल चित्रकला का विकास बाबर के राज्यकाल में 1526 ई. से प्रारम्भ हुआ । मुग़ल कला से कला जगत में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। इस काल के चित्रों में सफाई और बारीकी देखने को मिलती है। बाबर की माँ चंगेज खान के वंश की अर्थात मंगोल थी। इसी कारण यह वंश मुग़ल (मंगोल) कहलाया, अन्यथा यह तूरानी (तुर्क) था। मुग़ल बादशाहों को जैसे अपनी तुर्क परम्परा पर गर्व था, वैसे ही अपनी मंगोल परंपरा का भी अभिमान था और वे दोनों कुलों की रीति बड़े गौरव से मानते थे। मुग़ल बादशाहों ने अपनी-अपनी रूचि के अनुसार कला को आगे बढ़ाया। ये कला 250 साल चली और फिर ब्रिटिश साम्राज्य के प्रारम्भ में समाप्त हो गई।

बाबर में कला प्रवृति पूर्ण रूप से विद्यमान थी। वह कवि तथा लेखक था। उसने अपनी आत्मचरित 'बाबरनामा' लिखी। भारत वर्ष में उसका चार वर्ष का शासनकाल इतना व्यस्त रहा कि वह चित्रकला के विकास में विशेष योगदान नहीं दे सका। परन्तु उसकी आत्मकथा से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबर ने अनेक चित्रकारों को संरक्षण तथा राज्याश्रय प्रदान किया था। उसने रंगों व तुलिका के द्वारा चित्रण नहीं किया परन्तु पुस्तक में इतनी सजीवता के साथ शब्द चित्रण किया है की इससे उसके कला पारखी होने का पता चलता है।

बाबर का पुत्र हुमायूँ अपनी कल्पनाओं को चित्रकारों द्वारा चित्र का रूप देता था। हुमायूँ को अपने पिता के समान साहित्य तथा कला से प्रेम था। हुमायूँ इतना कला प्रेमी शासक था कि युद्ध के समय में भी अपने पास सुन्दर चित्रकला कि पोथियों को रखता और अवकाश के क्षणों में उनको देख कर कलाभिरुचि को सन्तुष्ट करता था। हुमायूँ ने मीर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुस्समद शीराजी को आमन्त्रित किया और दरबारी चित्रकार नियुक्त किया। इन दोनों कलाकारों ने ईरानी शैली को भारतीय कला शैली में ढालकर चित्रकला के क्षेत्र में नवीन सम्भावनाओं को जन्म दिया। वे दोनों बाद में अकबर के दरबार में भी सम्मानपूर्वक कला सृजन करते रहे।

जहाँगीर के शासन काल में पशु-पक्षियों का चित्रण सर्वाधिक हुआ। जहाँगीर के बाद शाहजहाँ के समय में चित्रकला के क्षेत्र में पतन होने लगा। पहले के सामान कला में वो बारीकियाँ नहीं रही और चित्रकला का स्थान वास्तुकला ने ले लिया जिसका एक नमूना 'ताजमहल' है। औरंगजेब को चित्रकला से नफरत थी इस

कारण उसने चित्र नष्ट करवा दिए थे। उसके समय में मुग़ल चित्र परम्परा पूर्णतः समाप्त हो गई। जैसे-जैसे राजाओं का राज्यकाल उठा और गिरा वैसे-वैसे चित्रकला भी उठती गिरती गई।

अकबर के शासन काल में चित्रकला

अकबर का अर्थ होता है 'महान'। वह एक महान शासक के साथ-साथ महान चित्रकार भी था। 13 वर्ष की उम्र में ही हुमायूँ की मृत्यु के कारण उसे राज गद्दी सम्भालनी पड़ी। अकबर के शासन में शिक्षा,संस्कृति तथा कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ जो आगे के राजाओं के काल तक चलता रहा। वह अपनी पुस्तकों को चित्रों से सुसज्जित करवाता था जिनमे से एक है 'हम्जानामा'। सम्राट कहानियों के शौकिन थे इसलिए महाभारत, रामायण आदि महाकाव्यों पर चित्रण करवाता था। इसके अलावा पशु-पक्षी चित्रण व प्रकृति चित्रण भी बहुत मात्रा में हुए। अकबर के काल में मुग़ल चित्रण में बड़े पैमाने पर काम हुआ।

अकबरकालीन चित्रों की विशेषताएं

- अकबरी चित्रों की रेखाओं में लय तथा गति है। रेखाओं की सहायता से स्वाभाविकता दिखाई गई है।
- चमकदार रंगों का प्रयोग हुआ है, लेकिन ईरानी चित्रों वाली बेतहाशा चमक नहीं है। यहाँ हल्के व धूमिल रंगों की सुर्खी में सन्तुलन तथा अन्तराल की सुखद व्यवस्था की गई है। बाद के चित्रों में छाया तथा परदाज उभर कर सामने आया है।
- चित्रतल पर वास्तु, पहाड़ों, वृक्षों तथा मानवाकृति की अधिकता देखी जा सकती है।
- चित्रों के बीच-बीच में ग्रन्थ से सम्बन्धित सुलिपि की पट्टियाँ खिंची है, यह ईरानी प्रभाव है।
- ग्रन्थों में एक ही चित्रकार का कार्य न होकर कई कलाकारों का कार्य होता था, बल्कि एक चित्र भी कई चित्रकारों द्वारा पूरा होता था।
- अकबरी चित्रों में ईरानी तथा भारतीय तत्वों के साथ यूरोपियन तत्व भी दिखाई देता है विशेषतया छाया-प्रकाश तथा क्षय-वृद्धी जैसे तत्वों की ओर भारतीय कलाकारों का झुकाव होने लगा था।

जहाँगीर के शासन काल में चित्रकला

सम्राट जहाँगीर का राज्यकाल 1605 ई. से 1627 ई. तक रहा। इस समय तक मुग़ल शैली अपनी पराकाष्टा पर पहुँच गई थी। जहाँगीर अकबर के सामान उदार न था, जिसके परिणामस्वरूप चित्रकला के विषयों का दायरा सीमित हो गया। अब धार्मिक कथाओं के चित्रों तथा काल्पनिक

चित्रों का अभाव हो गया। चित्रों का मुख्य विषय जहाँगीर सम्बन्धित घटनाओं और उसका ध्यान आकृष्ट करने वाली वस्तुओं का रह गया। जहाँगीर ने भी अपना आत्मचरित लिखा है। वह जो भी सुन्दर और विलक्षण पशु-पक्षी, फूल, या वृक्ष आदि देखता उनके चित्र तैयार करा लेता था। अब तक मुग़ल कला ईरानी शैली से मुक्त हो गई थी इस समय के तुलिका के काम में अधिक परिष्करण दिखता है। पशु-पक्षियों के चित्रों में स्वाभाविकता तथा वास्तविकता है। इस समय का सर्वाधिक प्रसिद्ध चित्र 'बाज' का है । इसकी कठोर आँखें और सिमटी पलक द्वारा उसका स्वभाव स्पष्ट है। जहाँगीर काल में पुस्तक चित्रों के स्थान पर अधिकतर लघु चित्र ही बनने लगे थे जो चित्रगारों में रखे जाते थे। यह समय मुग़ल कला की पूर्ण यौवनावस्था का था ।

जहाँगीरकालीन चित्रों की विशेषताएं

- इस समय की चित्रकारी ईरानी प्रभाव से मुक्त हो चुकी थी।
- चित्रों में अब यथार्थता अधिक आ गई थी। पक्षियों का इतना स्वभाविक चित्रण हुआ है कि वह आधुनिक तकनीक से खिंची रंगीन फोटो सी लगती है। पक्षियों के पंख एक दम स्वाभाविक लगते है।
- रेखायें अधिक महीन व कोमल है।
- इस काल में हाशियों की सुन्दरता बढ़ गई थी। हाशियों में जन-जीवन के दृश्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि को अलंकरण के रूप में बनाया जाता था।
- रंगों में सूफियानापन व परस्पर मिश्रित रंगों तथा एक ही रंग की तानों का प्रयोग होने लगा था।

जहाँगीर के बाद शाहजहाँ ने भारत के शासन कि बागडोर सम्भाली। किन्तु शाहजहाँ के काल में मुग़ल चित्रकला का रूप बदल गया। उसकी व्यक्तिगत रूचि चित्रकला में नहीं बल्कि स्थापत्य कला में थी। फिर भी उसने उन सांस्कृतिक परम्पराओं से छेड छाड नहीं की, जिनकी स्थापना उसके पितामह ने की थी। चित्रकार निरन्तर मुग़ल दरबार में आश्रय पाते रहे और चित्रकला पलती रही। चित्रकला का उद्देश्य अब मुग़ल सल्तनत के वैभव का प्रदर्शन मात्र रह गया था। शाहजहाँ के काल में चित्रों की सजावट अपनी परिपक्वता की पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी, किन्तु इस अवस्था के बाद पतन स्वभाविक था।

औरंगजेब का शासन काल मुगल चित्रकला के पतन का इतिहास है। उसके हाथों में शासनाधिकार आते ही इस क्षेत्र की रही सही खूबियाँ भी सर्वथा जाती रही। उसने चित्र कला का प्रबल विरोध किया। इस काल में

चित्रकारों को किसी प्रकार का राजकीय प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हुआ । अतः इस काल में चित्रकला का पतन हुआ ।

मुग़ल काल के प्रसिद्ध चित्रकार

मीर सैयद अली

मन्सूर

ख्वाजा अब्दुस्समद शीराजी

दसवन्त

बसावन

फार्रुख बेग

बिशनदास

केसू दास

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य

- मुग़ल कला में अकबर तथा जहाँगीर काल के पशु-पक्षियों के चित्रों का अध्ययन करना।
- पशुओं तथा पक्षियों के चित्रों के साथ उनके रेखा, रूप, वर्ण, तान, सामंजस्य, सन्तुलन और प्रभाविता का विस्तार से अध्ययन।
- हाशियों में पशु - पक्षी चित्रों का अध्ययन।
- मुग़ल चित्रों के चित्रण की विधि तथा सामग्री का अध्ययन करना ।

मुग़ल कला के पशु- पक्षी चित्रण ने मुझे बहुत आकर्षित किया। अत: मेरे शोध का उद्देश्य भी मुग़ल कला के पशु-पक्षी चित्रों की चरम सीमा को लक्षणों तक पहुचना है । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैंने विभिन्न अध्यायों में इसके विविध पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

साहित्य की समीक्षा

- विषय पर उपलब्ध साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन शोध कार्य को सुगम बना देता है इसलिए विषय से सम्बंधित लेख, पुस्तकें, पत्र, आदि का गहराई से पठन-पाठन, शोधकर्ता द्वारा किया जाना चाहिए । इस के अध्ययन से अनुसन्धान कार्य कुछ सरल हो जाता है।
- अध्ययन की प्रविधियों का ज्ञान हो जाता है।
- महत्वपूर्ण अवधारणाओं की जानकारी मिल जाती है, तथा शोध कार्य में आने वाली कठिनाइयों का पता लग जाता है।
- यह अवधारणाओं को समझने व प्रक्कल्पनाओं के निर्माण में सहायक होता है।

आर. एन. टंडन "भारतीय चित्रकला की रुपरेखा", भारत भारती प्रकाशन, मेरठ, 1962 द्वितीय संस्करण

इसमें मुग़ल कालीन कला का परिचय देते हुए यह बताया गया है की यह शैली बाबर के राज्यकाल में (1526 ई.- 30ई.) ईरान से आकर भारत में प्रविष्ट हुई। हुमायूँ के समय में इसका बीजारोपण हुआ, अकबर के राज्य में यह फलीफूली, जहाँगीर के समय में यह अपनी पराकाष्टा की विकसित अवस्था को प्राप्त हुई, शाहजहाँ के समय इसमें पतन के चिन्ह प्रकट होने लगे तथा औरंगजेब के समय में यह प्राय: समाप्त होने लगी। मुग़ल कला के चित्रकार कुछ पटना, कुछ दक्षिण और कुछ भारत की उत्तर की पहाडियों पर जाकर अपना जिविकोपार्जन करने लगे।

टंडन आर. एन. "भारतीय चित्रकला की रुपरेखा", भारत भारती प्रकाशन, मेरठ, 1962 द्वितीय संस्करण

इस पुस्तक में हाशियों का वर्णन किया गया है की हाशिये इतने अलंकृत है, जिनसे ज्ञात होता है कि वे नक्काशों द्वारा न बनकर चित्रकारों द्वारा ही तैयार किये गए है। उन पर बेल-बूटे, शिकारगाह, बीच-बीच में पशु-पक्षी तथा ऐसे दृश्य, जिनका सम्बन्ध चित्र से हो अथवा न हो, बने है।

सोम प्रकाश वर्मा "फ्लोरा एंड फौना इन मुग़ल आर्ट ", प्रकाशक: जे .जे .भाभा, मुंबई, इंडिया, Vol. 50 No. 3, मार्च 1999

इसमें ये बताया गया है की जहाँगीर और शाहजहाँ ने बहुत से चित्र बनवाए जिनके हाशियों में पशु पक्षियों का बहुत विस्तार से अङ्कन करवाया। शाहजहाँ के काल में सङ्गे के विभिन्न रङ्गातों में भी काम हुआ। पक्षियों और जानवरों को शिकार के परिदृश्य में ज्यादा दिखाया गया है।

सत्यम प्रकाश वर्मा "फ्लोरा एण्ड फौना इन मुग़ल आर्ट", प्रकाशकः जे .जे .भाभा, मुम्बई, इण्डिया, Vol. 50 No. 3, मार्च 1999

पक्षियों की आकृति को बहुत ही सजीवता के साथ बनाया गया है की उसके आन्तरिक भाव भी स्पष्ट दिखते है, नेत्रों के भाव देखते ही बनते है। आङ्खों में क्रूरता और चोंच के तीखेपन सहित भीतरी विवरण कलाकार के उत्सुक स्वभाव को दिखता है।

सत्यम प्रकाश वर्मा "फ्लोरा एण्ड फौना इन मुग़ल आर्ट", प्रकाशकः जे .जे .भाभा, मुम्बई, इण्डिया, "दी एलिफेंट इन मुग़ल पेंटिङ्ग" असाङ्क कुमार दास, Vol. 50 No. 3, मार्च 1999

इसमें बताया गया है की अकबर के काल में अबू'ल फ़ज़ल ने हाथियों का विस्तार से अध्ययन तथा चित्रण किया है, उनका रखरखाव, भञ्जन, प्रशिक्षण, कर्मचारियों द्वारा उन पर अत्याचार, अकबर का उनके प्रति प्रेम इन सब को चित्रों के माध्यम से दिखाया गया है।

आर. ए. अग्रवाल" "भारतीय चित्रकला का विवेचन"", प्रकाशकः इण्टरनेशनल पब्लिशिङ्ग हाऊस, मेरठ, नवीन संस्करण-2005

“जहाँगीर पशु पक्षियों के एल्बम बनवाने का बड़ा शौकिन था। वह जानवरों के प्रति दयालु था - एक बार उसने एक हाथी को तालाब के ठन्डे पानी में कापते देखा था तभी उसने यह हुक्म दिया के तालाब का पानी गरम कराया जाये, जिससे यह हाथी जल-क्रीडा का आनन्द उठा सके।”

आर. ए. अग्रवाल‘ “भारतीय चित्रकला का विवेचन””, प्रकाशक: इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, नवीन संस्करण -2005

इसमें कहा गया है की जहाँगीर शिकार, फूल तथा पशु-पक्षियों के विषय में बहुत रूचि लेता था। उस्ताद मंसूर ने जहाँगीर के लिए पशु-पक्षियों के अनेक चित्र बनाये। उसके द्वारा बनाया टर्की कॉक तथा बाज के चित्र संसार प्रसिद्ध है। उसके चित्रों में नक्काशी जैसा काम होता था इसी से वे अपने आपको मंसूर नक्काश कहते थे।

रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रकाशक :राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

“मुग़ल चित्रों में गैंडा, घोडा, मेंढा, शेर, ऊँठ, मृग, बकरे, जेबरा, जिराफ आदि अनोखे पशुओं का चित्रण भी चित्रों में मिलता है। जहाँगीर को पक्षियों का अत्यधिक शौख था। उनके राज्यकाल में पशुओ के साथ साथ पक्षियों का चित्रण भी अत्यधिक हुआ। मोर, मोरनी, सुनहेरा कबूतर, शिकरा, कुकुआ, पीलू, तुर्की, तीतर, बुलबुल, कोयल, सारस, बतख, मुर्ग, बटेर, आदि है। इस प्रकार पशु-पक्षिओं की रचना में बारीकियों का इतना सफल एवं स्पष्ट प्रदर्शन है कि चित्र में निरुपित पशु-पक्षिओं की जाति, उपजाति, कि पहचान में समस्या नहीं आती”।

रीतिकालीन भारतीय समाज शशिप्रभा प्रसाद

लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण : 2007

http://books.google.co.in

“जहाँगीर चित्रकला का इतना कुशल पारखी था कि वह अपने आत्मचरित में लिखता है - " हमारे लिए चित्रकला कि ओर रूचि और चित्रों के गुण-दोष विवेचन की शक्ति इतनी बढ़ गई है की जब कोई कलाकृति- चाहे मृत चित्रकारों कि हो या वर्तमान की हो, हमारे सामने बिना कलाकार का नाम बताये उपस्थित कि जाती तो हम तुरन्त बतला देते की अमुक की करती है। और यदि एक ही चित्र में कई शबीहे होती और प्रत्येक भिन्न कलाकार कि होती तो भी हम हरेक का पता लगा लेते कि कौन किसकी है। जब सम्राट कि अभिरुचि कि यह स्थिति हो तो राजतन्त्रीय समाज व्यवस्था में सम्बन्धित कला का चरम विकास स्वभाविक ही है”।

http://indiansaga.com/art/mughal_painting.html

Almost all the Mughal Emperors of India between about 1570 and 1750 employed large numbers of Hindu and Muslim painters. These artists at first produced miniatures that were illustrations for the emperor's books. More than 100 painters worked in the palace studio at any given time on scenes for histories, poetry books, books of fables, or biographies of the emperor. Mughal artists loved naturalism in these miniatures and tried to make their pictures as realistic as possible. Human and animal portraits became a speciality.

दास असाक्र कुमार “स्प्लेंडर ऑफ़ मुग़ल पेंटिंग” ,प्रकाशक: ए.एफ. शैख, बॉम्बे, इंडिया

इसमें लेखक ने बताया है की जहाँगीर अपने खास चित्रकारों से ऐसी चीजें □□ के लाने क□कहता था ज□की अनदेखी ह□, आश्चर्यजनक ह□और ल□ग□ के लिए अनजानी ह□ फिर उनका चित्रण करवाते थे उसमें एक उदाहरण है तुर्की कॉक।

असाक्र कुमार दास “ मुग़ल मास्टर्स फर्दर स्टडीज़□ मार्ग पब्लिकेशन, मुंबई, इंडिया, Vol.49 No. 4, जून 1998

Abd us-Samad’s horse pictures fall into four categories: (1) sepictions of horses and grooms alone, (2) paintings depicting hermits as well as the horse and groom, (3) hunting scenes and (4) composition.

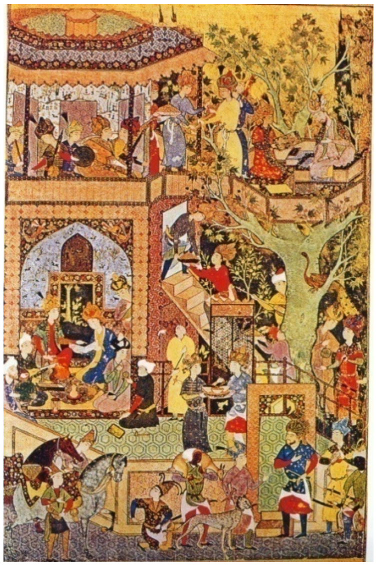 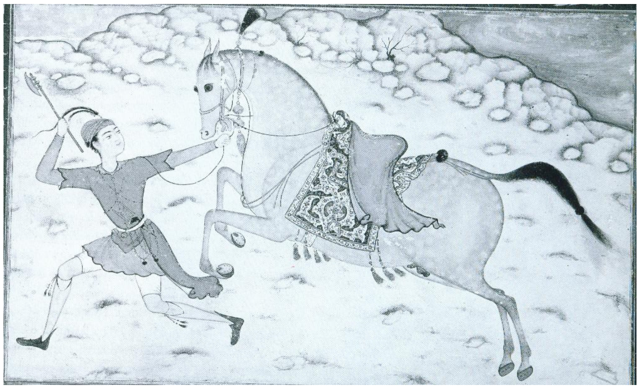

Sanjeev Prasad Srivastava "Jahangir, a connoisseur of mughal art" , publisher : Shakti Malik Abhinav , New Delhi, India, first published in India 2001

http://books.google.co.in/books?id=qeNy_Kbs0hMC&pg=PA16&source=gbs_selected_pages&cad=3#v=onepage&q&f=false

Prologue: The art of Jahangir was essentially successful in depicting tha flora and fauna of his kingdom. Even his officers were keen on presenting special birds and animals to the emperor in order to win his favour. The emperor always felt pleasure on seeing the new birds. He possessed a scientific acumen in regard to the animal world.

Sanjeev Prasad Srivastava "Jahangir, a connoisseur of mughal art" , first published in India 2001, publisher : Shakti Malik Abhinav , New Delhi, India.

http://www.spongobongo.com/animals.htm

Starting with the Indian type animals a systematic evaluation of animals in Islamic and related art shows a predominance of matches between the Widener Mughal Animal Carpet and Indian art. The elephants as well as the crocodile are very close matches with animals in a number of miniatures all attributed to an Indian artist named Miskin.

Marguerite – Marie Deneck "Indian Art", Paul Hamlyn Ltd.,1967

Jahangir loved to observe animals and birds with great detail,Falcon on its perch, standing out in profile against a green background

"Falcon", Jahangir period, 11 x 19 cm..17th cent.

The Chester Beatty Library "Mughal and other Indian Paintings"

The Leopard runs away, TutiNama, c. 1580

The Leopard, breaking the rectangular dimensions of the picture, Forceful leap is dynamic, The women's two sons with exaggerated gestures characteristic of HamzaNama.

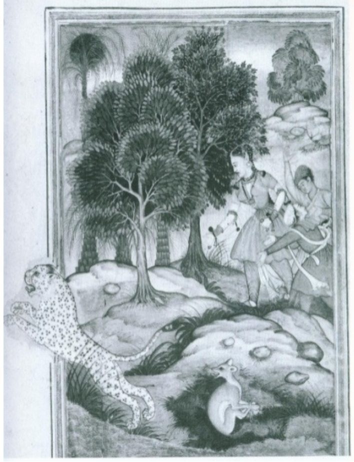

Percy Brown "Indian Paintings under the Mughals"

Portraits of Daulat the painter, and Abdur- Rahim the writer

हाशियों में पशुचित्रण

Mr. Dyson Perrins's copy of the Khamsa: painted c.A.D. 1605; size 5" x 8".

Douglas Mannering "Great works of Indian Art", Parragon book service Limited,Great Britain 1996

Prince Salim surprised by Lion, Salim seated high on the back of an elephant, Akbar's artists were masters at combining colourful decoration and pattern –making.

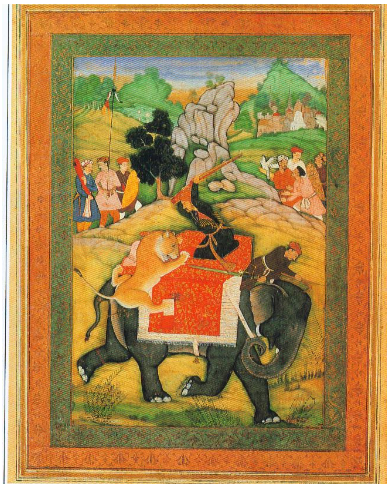

प्रेरणा /औचित्य

मुग़ल कालीन कला में चित्रकला के क्षेत्र में इतना अधिक काम हुआ है जिसे लेकर बहुत से शोध कर्ताओं ने अपना शोध कार्य किया है परन्तु मेरे शोध में मैं अकबर और जहाँगीर काल में हुए पशु-पक्षियों के चित्रों को चित्रात्मक तत्वों के आधार पर स्पष्ट करूँगी। ‘*चित्रात्मक तत्वों के आधार पर मुगल लघु चित्रों में पशु-पक्षी चित्रण (अकबर और जहाँगीर के सन्दर्भ में)* ’ मेरा विषय है। अकबर और जहाँगीर के काल तक किस-किस प्रकार से पशु-पक्षी चित्रण हुए है और उनकी क्या विशेषताए है, उन चित्रों में संयोजन के तत्वों रेखा, रूप, वर्ण, तान, सामंजस्य, संतुलन और प्रभाविता का किस तरह से उपयोग किया है, कौन-कौन से चित्रकारों ने उन पर काम किया है उनका पूर्ण विवरण शोध कार्य में दिया जाएगा। जहाँगीर और अकबर के काल में पशु पक्षी चित्रण अधिक हुए है। उन दोनों के कार्यकाल में हुए चित्रणों में क्या अंतर है और क्या समानता है इसका भी पूरा अध्ययन करूंगी। मुग़लों काल में चित्रित हुए पशु-पक्षी चित्रण ने मुझे आकर्षित किया है। मुग़ल कलाकारों ने चित्रों को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए हाशियों का आविष्कार किया। हाशियें तस्वीर का दूसरा भाग है फिर भी तत्कालीन कलाकारों ने इनको एक मुख्य अंग मान कर ही सुसज्जित किया। प्राकृतिक दृश्य में मगरमच्छ, सिंह, हिरन, खरगोश चीता, घोड़ा, हाथी, मछली, गिलहरी, चिड़िया, तोता आदि पशु-पक्षियों को तो चित्रित किया ही है, साथ-साथ अनेक काल्पनिक पशुओं को भी अंकित किया है। मेरे इस शोध कार्य से यह जानने में मदद मिलेगी की मुग़ल काल में पशु-पक्षी चित्रण का क्या महत्व और खासियत है। इस जानकारी को ले कर शोध कर्ताओं द्वारा आगे भी शोध किये जा सकेंगे। प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा मुग़ल चित्रकला के विवेचन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन को एक नयी दिशा व विधा की उपलब्धि होगी, उसके कलापक्ष एवं भावपक्ष में विद्यमान वैविध्य को कला एवं जगत के समक्ष लाने में सहयोग प्राप्त होगा तथा मुग़ल चित्रों का यह पक्ष पूर्ण रूपेण उद्घाटित किया जा सकेगा। इस विषय से सम्बंधित अनेक देश के विभिन्न संग्रहालयों, पुस्तकालयों, एवं व्यक्तिगत संग्रह के आधार पर संग्रहित लघु चित्रों का अध्ययन कर प्रस्तुत शोध प्रबंध में यही प्रयास रहेगा कि इस विषय से सम्बंधित अधिक से अधिक नवीन एवं सार्थक तथ्य प्रकाश में लाये जा सकें।

शोध पद्धति

शोध एक क्रमिक प्रक्रिया है। प्रत्येक शोध कुछ विशिष्ट पदों में किया जाता है, ताकि शोधार्थी सही दिशा में कार्य करते हुए अपना शोध कार्य कर सके, क्योंकि समस्त शोध - प्रक्रिया कई क्रियाओं का सम्मलेन है, जो परस्पर जुडी हुई होती है। शोधकार्य को निश्चित अर्थ तथा दिशा प्रदान करने के लिए यह अत्यावश्यक है की शोधकार्य की संक्षिप्त रुपरेखा तैयार की जाये। उपरोक्त कथन की प्रायोगिकता को ध्यान में रखते हुए अधोलिखित शोध रुपरेखा तैयार की गई है। शोध प्रारूप को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है :

1. साधन: पुस्तकें, इन्टरनेट, शोधपत्र आदि।
2. अध्ययन का स्वरूप: हमारे अध्ययन का स्वरूप मिश्रित पद्धति पर आधारित है। जहाँ हम विषयवस्तु के विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ अन्वेषणात्मक अध्ययन करते हुए संशोधन की विषयवस्तु में कार्य कारण भागों का अन्वेषण करना होता है। इस शोध अध्ययन को निम्न शोध पद्धति के आधार पर पूर्ण किया जाएगा:

i. हमें संशोधन कार्य में विषय-वस्तु पर उपलब्ध तत्कालीन इतिहास की पुस्तकें, महत्वपूर्ण घटनाकर्म व मुग़ल बादशाहों का संक्षिप्त अध्ययन करना आवश्यक है।

ii. तत्कालीन विभिन्न चित्र माध्यमों, पदार्थों व तकनीकों का अध्ययन करना है।

iii. समस्या अन्मूलक तथ्यों को सुस्पष्ट व सूचीबद्ध करना।

iv. मुग़ल कला के पशु-पक्षी चित्रों की भावना तथा उनमें अन्तर्निहित चित्रकार की मनोदशा को समझने का प्रयास करना।

v. समय सीमा निर्धारण - संशोधन कार्य में समय अनुशासन का अपना महत्व है। अत: प्रस्तुत शोध संशोधन में भी विभागानुसार समय सीमा निर्धारण व आवंटन किया गया है।

तथ्यों के स्त्रोतों की विश्वसनीयता की महत्ता को ध्यान में रखते हुए उपयोग किये गए तथ्य प्रमाणित व विश्वसनीय पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोध पत्रों, आदि स्त्रोतों तथा प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित लेखकों व शोधकर्ताओं के कार्य का अध्ययन किया जाएगा।

सामग्री संकलन

अनुसन्धान में अनेक प्रकार की सामग्री एवं संकलन की अनेक पद्धतियां है। अध्ययन से सम्बन्धित कई सूचनाएँ ऐसी होती है जो अध्ययनकर्ता स्वयं एकत्र करता है तथा दूसरी संस्थाओं और समितियों द्वारा एकत्र सामग्री को अपने अध्ययन में उपयोग करता है कई सूचनाएँ, तथ्य, जानकारियां एतिहासिक होती है। वे जीवनियों, पुस्तकों, पाण्डुलिपियों, डायरियों, जनगणना प्रतिवेदनों आदि के रूप में भी उपलब्ध होती है जिनका उपयोग अध्ययनकर्ता अपने अनुसन्धान में करता है। सामग्री के अनेक स्त्रोत तथा एकत्र करने की विभिन्न पद्धतियां होती है, उनके अनुसार विद्वानों ने सामग्री को दो प्रकारों में बाँटा है : प्राथमिक तथा द्वितीयक सामग्री। मुग़ल कला के अध्ययन के लिए द्वितीयक सामग्री का उपयोग करना होगा क्योंकि मुग़ल काल से सम्बन्धित लोगों का मिलना असम्भव है इसलिए पुस्तकालय तथा संग्रहालय आदि के माध्यम से अध्ययन करके सामग्री संकलित करनी होगी। भारत के विभिन्न पुस्तकालयों तथा विभिन्न संग्रहालय से सामग्री एकत्र करूँगी।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूँ की पशु-पक्षी राजाओं का मुख्य विषय रहा है वे अपने साथ हमेशा अपने साथ चित्रकारों को रखते थे और जैसे ही कोई सुन्दर पक्षी दिखता उसका चित्रण करवाते थे। इतना ही नहीं उनके मन में पशुओं के लिए बहुत दया भावना रहती थी। अकबर और जहाँगीर के काल में पशु-पक्षी चित्रण सर्वाधिक हुए है। जहाँगीर को हमेशा ऐसे पशु-पक्षी की तलाश रहती थी जो आम लोगों के द्वारा नहीं देखे गए हो और दुर्लभ तथा अनूठे हों। जहाँगीर के समय का एक प्रमुख चित्रकार उस्ताद मंसूर था जिसने उसके लिए बहुत से पशु-पक्षी चित्र बनवाए। मुग़ल सम्राट अपने चित्रकारों को चित्र बनवाने की अच्छी कीमत दिया करते थे। जिस चित्रकार का जितना अच्छा काम होता था उतनी ही जयादा कीमत मिलती थी इसी कारण चित्रकला में दिनों-दिन निखार आता गया। मुग़लकला के चित्रों में हाशियों का बहुत महत्व है। हाशियों में फूल-पत्तियों आदि के अलंकरण के साथ पशु-पक्षियों का चित्र भी देखने को मिलता है।

सम्पूर्ण रूप से देखा जाये तो मुग़ल कला ऐश्वर्ययुक्त वास्तविकता का चिन्हित स्वरुप तथा सुघड़ कलाकारों द्वारा विभिन्न वर्ण योजनाओं तथा उनके बदलते हुए भावों का परिक्षण तथा अनुभव करने की कला है। कुछ विदेशी तत्वों के होने के बावजूद भी यह एक राष्ट्रीय शैली है तथा अन्य देशों की शैलियों से सर्वथा भिन्न है। कला अनुरागी मुग़ल बादशाहों ने भारत की प्राचीन कला परम्परा को सुरक्षा प्रदान की तथा नवीन स्वरूप भी दिया। मुगलों की यह स्थायी देन भारतीय कला के इतिहास के लिए सदैव चिरस्मरणीय रहेगी।

शोध की सामग्री

परिचय

साहित्य की समीक्षा

शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य

शोध पद्धति

सन्दर्भ तथा ग्रन्थसूची

अध्याय विभाजन

i. मुग़ल लघु चित्रकला एक संक्षिप्त परिचय
ii. अकबर और जहाँगीर काल में पशु-पक्षी चित्रों में प्रयुक्त चित्रात्मक तत्व
iii. पशु - पक्षी चित्रों में रेखा, रूप, वर्ण एवं तान
iv. पशु-पक्षी चित्रों में सामञ्जस्य, सन्तुलन तथा प्रभाविता का महत्त्व
v. हाशियों में पशु पक्षी चित्रण
vi. अकबर और जहाँगीर काल में पशु-पक्षी चित्रों के प्रमुख चित्रकार
vii. मुग़ल कला के चित्रों का रचना विधान तथा सामग्री
viii. उपसंहार

चित्रावली

सन्दर्भ तथा ग्रंथसूची

- आर. एन. टंडन "भारतीय चित्रकला की रुपरेखा", भारत भारती प्रकाशन, मेरठ, 1962
- सोम प्रकाश वर्मा "फ्लोरा एंड फौना इन मुग़ल आर्ट ", प्रकाशक: जे .जे .भाभा, मुंबई, इंडिया, 1999
- आर. ए. अग्रवाल" "भारतीय चित्रकला का विवेचन"", प्रकाशक: इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2005
- डॉ. रीता प्रताप, "भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास", प्रकाशक :राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2011
- शशिप्रभा प्रसाद "रीतिकालीन भारतीय समाज", लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007
- राय कृष्णा दास "भारत की चित्रकला", भारती-भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1996
- असोक कुमार दास " मुग़ल मास्टर्स फर्दर स्टडीज़", मार्ग पब्लिकेशन , मुंबई , इंडिया, 1998
- असोक कुमार दास "स्प्लेंडर ऑफ़ मुग़ल पेंटिंग " ,प्रकाशक : ए.एफ. शैख़, बॉम्बे,1986
- Douglas Mannering "Great works of Indian Art", Parragon book service Limited,Great Britain 1996
- Percy Brown "Indian Paintings under the Mughals", Cosmo Publications, New Delhi, India 1981
- The Chester Beatty Library "Mughal and other Indian Paintings", Scorpion Cavendish Ltd., England,1995
- Marguerite – Marie Deneck "Indian Art", Paul Hamlyn Ltd.,1967
- http://hi.bharatdiscovery.org/india/
- http://books.google.co.in
- http://indiansaga.com/art/mughal_painting.html
- http://books.google.co.in/books?id=qeNy_Kbs0hMC&pg=PA16&so
- urce=gbs_selected_pages&cad=3#v=onepage&q&f=false
- http://www.asianart.com/articles/minissale/
- http://columbiaawaaz.com/2012/05/20/mughal-art-the-unexpected-facilitator-of-british-imperialism-in-india/
- http://www.harmyne.com/2012/05/mughal-paintings-in-india.html